ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-6* July- 2020
Innovation The Research Concept

गाजीपुर (उ0प्र0) जनपद में शस्य गहनता का वितरण प्रतिरूप : एक प्रतीक अध्ययन

Distribution Pattern of Crop Intensity in Ghazipur (U.P.) District: A Symbol Study

Paper Submission: 15/07/2020, Date of Acceptance: 25/07/2020, Date of Publication: 26/07/2020

सुनील कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
पीपीगंज, गोरखपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

अशोक कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
श्रीमती काली देवी
महाविद्यालय, भगनें भगवानपुरी
वाया बरही, चौरी चौरा,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र के विकास में मुख्य भूमिका निभाने वाले कृषि सम्बन्धी कार्यों के क्षेत्रीय वितरण से यह ज्ञात होता है कि इनका सघन वितरण गाजीपुर, मुहम्मदाबाद और उनके समीपवर्ती भागों में है। वास्तव में जहाँ–जहाँ कृषिगत विकास अधिक है। वहीं पर कृषि कार्यों के लिए आवश्यक भौगोलिक तथा अन्य कार्यों का भी महत्व है। जो कृषि अर्थतन्त्र को विकसित करने में सहायक है। इस तरह कृषि विकास अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती, उत्तरी–पूर्वी और उत्तरी पश्चिमी भागों में अधिक हुआ है। जबकि शेष दक्षिणी–पूर्वी भागों में कृषि विकास कम हुआ है। अतएंव कृषि अर्थतन्त्र को गतिशील करने के लिए बाजार व्यवस्था का सक्षम होना आवश्यक है इसलिए अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी और दक्षिणी–पूर्वी भागों मे तथा दक्षिणी और दक्षिणी–पश्चिमी भाग में कृषिगत बाजार और कृषि मण्डियों की स्थापना आवश्यक है।

In the study presented, it is known from the regional distribution of agricultural works that play a major role in the development of the region, that their intensive distribution is in Ghazipur, Muhammadabad and their adjacent parts. In fact, wherever agricultural development is more. At the same time, the geographical and other works required for agricultural works are also important. Which is helpful in developing agricultural economy. Thus agricultural development has taken place in the intermediate, north-eastern and north-western parts of the study area. Whereas in the remaining southern-eastern parts, agricultural development has reduced. Therefore, to enable the agrarian economy to be able to have a market system, it is necessary to establish agricultural markets and agricultural markets in the eastern and south-eastern parts of the study area and in the southern and south-western parts.

मुख्य शब्द :कृषि विकास प्रक्रिया, मनुष्य, तकनीक और पर्यावरणीय तथ्य, पारस्परिक योगदान, कृषि का स्वरूप, मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी, जैविक तकनीकों का विकास, नवीन फसल प्रजातियों का प्रयोग, प्रकृति से ही अनेक सम्भावनाओं की खोज इत्यादि ।
Agricultural Development Process, Humans, Technology and Environmental Facts, Mutual Contribution, Nature of Agriculture, Human Being A Reflective Animal, Development of Biological Techniques, Use of New Crop Species, Discovery of Many Possibilities From Nature, etc.

प्रस्तावना

विश्व के विभिन्न भागों में सम्बन्धित पर्यावरण के अनुसार ही विभिन्न प्रकार की फसलों की कृषि प्रारम्भ हुई। इस तरह कृषि विकास प्रक्रिया से मनुष्य तकनीक और पर्यावरणीय तथ्य का पारस्परिक योगदान है। जैसे–जैसे मनुष्य की जनसंख्या वृद्धि हुई उसी के अनुरूप अपने आवश्यकता की पूर्ति हेतु क्रमशः मनुष्य कृषि का स्वरूप परिवर्तित करता गया। मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है। इसीलिए उसके सामने जब–जब समस्याएं आयीं। उनका निराकरण करने के लिए उसने तकनीकों का विकास किया। जिससे विभिन्न प्रकार की फसलों में गुणात्मक और मात्रात्मक वृद्धि हुई। इसी का परिणाम वर्तमान समय में एक वर्ष के अन्तर्गत बोयी जाने वाली फसलों का उत्पादन सम्भव हुआ है। और आज अधिक जनसंख्या दबाव के कारण मनुष्य ने जैविक तकनीकों का विकास करके

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-6* July- 2020
Innovation The Research Concept

नवीन फसल प्रजातियों को प्रयोग में लाने लगा है, परिणामस्वरूप वह प्रकृति से ही अनेक सम्भावनाओं की खोज करने में सक्षम हुआ है।

शस्यगत भूमि

जनपद गाजीपुर में कुल शस्य गत भूमि 406873 हेक्टेयर है, जबकि 1993–94 में यह 386282 हेक्टेयर थी। 1999–2000 में बढ़कर 404659 हेक्टेयर हो गयी। 2007–08 में यह 411734 हेक्टेयर थी। वर्तमान समय में इसमें ह्रास हुआ है। सामान्य रूप में यह स्थानीय भौतिक सामाजिक कारकों का परिणाम है, जो क्रमशः इसमें परिवर्तन करते रहते हैं। क्षेत्र का सकल कृषित क्षेत्रफल 414577 हेक्टेयर है, जिसके 50.75% भू–भाग पर रवी, 47.58% भू–भाग पर खरीफ, 1.65% भू भाग पर जायद की फसलें उगायी जाती हैं। यहाँ का फसल प्रतिरूप प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक कारकों द्वारा नियंत्रित होता है।

क्षेत्र के 50.75% भू–भाग पर रवी की फसल का उत्पादन किया जाता है। यहाँ सबसे अधिक रवी की फसल भांवरकोल विकास खण्ड में 58.58% भू–भाग पर उगायी जाती है। इसके बाद रेवतीपुर (58.24%), करण्डा (51.66%), बाराचवर (50.80%) विकास खण्ड हैं सबसे कम रवी की फसल मरदह विकास खण्ड में, 48.31% भू–भाग पर उगायी जाती है। जनपद के वे भू–भाग जहा सिंचन सुविधाओं का अधिक विकास है, वहां रवी की फसलों का सकेन्द्रण अधिक व जहाँ सिंचन सुविधाओं का कम विकास है, वहां रवी की फसलों का सकेन्द्रण कम है।

खरीफ क्षेत्र के 47.58% भू–भाग पर उगायी जाती है। क्षेत्र में सबसे अधिक खरीफ की फसल मरदह विकास खण्ड में 50.64% भू–भाग पर उगायी जाती है। इसके बाद देवकली (50.54%), जमानियां (50.00%), सैदपुर (49.77%) है। सबसे कम भावरकोल विकास खण्ड में 39.04% भू–भाग पर खरीफ की फसल उगायी जाती है। इसके अन्तर्गत धान, मक्का, अरहर, ज्वार, तिल, उर्द, मूग आदि फसलें हैं। जायद ग्रीष्म कालीन कृषि उपज है। सबसे अधिक जायद की फसल मुहम्मदाबाद विकास खण्ड में 5.35% भू–भाग पर की जाती है। इसके बाद गाजीपुर (3.59%), भावरकोल (2.44%) है। सबसे कम सैदपुर विकास खण्ड में 0.46% भू–भाग पर उगायी जाती है। इसके अन्तर्गत सब्जी एवं तरबूज, ककड़ी, खीरा आदि की फसलें हैं।

शस्य प्रतिरूप :–

अध्ययन क्षेत्र में कुल शस्य गत क्षेत्रफल 408655 हेक्टेयर है। जिसमें सर्वाधिक शस्यगत भूमि गेंहूँ के अन्तर्गत 42.12% हैं जबकि धान के अन्तर्गत (35.56%), जौ के अन्तर्गत (1.74%), ज्वार के अन्तर्गत (.74%), बाजरा के अन्तर्गत (3.5%), मक्का के अन्तर्गत .14%, मडुआ के अन्तर्गत 1.5%, उड़द के अन्तर्गत .31% मूँग और मसूर के अन्तर्गत 2.68%, चना के अन्तर्गत 1.03%, मटर के अन्तर्गत .87%, अरहर के अन्तर्गत 1.45%, लाही के अन्तर्गत .1%, गन्ना के अन्तर्गत 1.75%, आलू के अन्तर्गत 1.93%, प्याज के अन्तर्गत 18%, सब्जियों के अन्तर्गत 2.9%, चारा के अन्तर्गत 2.82% शस्य गत भूमि है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में गेहूँ और धान दो महत्वपूर्ण फसलें हैं। जिनमें कुल शस्य गत भूमि का 78% भाग सम्मिलित है। अन्य गौड खाद्यानों में जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, मडुआ आदि हैं। जबकि दलहन फसलों में केवल मसूर, चना अरहर महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त गन्ना और सब्जियों में आलू अधिक महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में खाद्यानों के अन्तर्गत लगभग 86% शस्य गत भूमि है, यह जनसंख्या के कृषिगत भूमि पर दबाव का सूचक है।[1] विकास खण्डवार विभिन्न फसलों के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप का तालिका संख्या 1 A व 1 B के अध्ययन से स्पष्टीकरण हो जाता है।

तालिका संख्या–1 A
अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपुर में शस्य प्रतिरूप वर्ष–2014

क्र. सं.	विकास खण्ड	चावल		गेंहू		जौ		ज्वार		बाजरा		मक्का		मडुआ		उड़द		मूंग		मसूर	
		योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%
1	जखनिया	11543	43.12	11244	42.00	318	1.19	22	0.08	97	0.36	9	0.03	13	0.05	47	0.18	30	0.11	61	0.23
2	मनिहारी	12314	42.39	14014	48.25	47	0.16	7	0.02	85	0.29	26	0.09	33	0.11	97	0.33	37	0.13	137	0.47
3	सादात	12603	43.14	13207	45.21	53	0.18	80	0.27	145	0.50	56	0.19	63	0.22	44	0.15	65	0.22	22	0.08
4	सैदपुर	8123	31.64	10988	42.79	176	0.69	230	0.90	1794	6.99	174	0.66	178	0.69	178	0.69	3	0.01	64	0.25
5	देवकली	8885	32.88	11082	41.01	242	0.90	299	1.11	2437	9.15	38	0.14	40	0.15	10	0.04	3	0.01	171	0.63
6	विरनो	8854	40.95	9462	41.77	255	1.18	16	0.07	101	0.47	7	0.03	7	0.03	20	0.10	9	0.04	16	0.07
7	मरदह	10428	40.77	12006	46.94	339	1.33	17	0.07	42	0.16	4	0.02	6	0.02	19	0.07	6	0.02	14	0.05
8	गाजीपुर	7182	34.67	8578	41.41	302	1.64	34	0.16	483	2.33	14	0.07	23	0.11	70	0.34	3	0.01	33	0.16
9	करण्डा	3586	20.85	6593	38.02	671	3.90	372	2.16	2416	14.05	16	0.09	16	0.09	27	0.16	5	0.03	271	1.58
10	कासिमाबाद	13352	39.48	15653	46.29	658	1.95	77	0.23	140	0.14	11	0.03	15	0.004	156	0.46	13	0.04	278	0.82
11	वाराचवर	10051	37.88	10517	39.64	484	1.82	200	0.75	315	1.19	88	0.33	90	0.34	119	0.45	18	0.07	1506	5.68
12	मोहम्मदाबाद	6185	27.25	8361	36.84	259	1.14	129	0.57	2036	1.97	10	0.04	18	0.08	222	0.98	26	0.11	749	3.30
13	भावरकोल	4143	16.98	6211	25.46	912	3.74	527	2.16	1561	6.40	111	0.46	115	0.47	32	0.13	6	0.02	5345	21.91
14	जमानिया	14004	38.55	14815	40.78	1180	3.25	372	1.02	1802	4.96	0	0	2	0.01	18	0.05	34	0.09	831	2.29
15	रेवतीपुर	5170	25.55	9510	46.99	860	4.25	295	1.46	756	3.74	6	0.03	6	0.03	159	0.78	0	0.00	650	3.21
16	भदौरा	8869	40.65	9917	45.46	363	1.66	360	1.65	55	0.25	0	0	0	0	55	0.25	0	0.00	593	2.72
	योग	145292	35.56	172158	42.12	7119	1.74	3037	0.74	14301	3.50	570	0.14	625	0.15	1275	0.31	258	0.06	10741	2.62

तालिका संख्या–1 B

अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपुर में शस्य प्रतिरूप वर्ष–2014

क्र. सं.	विकास खण्ड	चना		मटर		अरहर		लाही		गन्ना		आलू		प्याज		कुल सब्जी		चारा योग		कुल फसलगत क्षेत्र	
		योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%	योग	%
1	जखनिया	412	1.54	296	1.10	292	1.09	20	0.07	789	2.95	429	1.60	56	0.21	589	2.20	505	1.89	26772	100.00
2	मनिहारी	127	0.44	123	0.42	130	0.45	13	0.04	718	2.47	154	0.53	43	0.15	238	0.82	703	2.42	29046	99.98
3	सादात	261	0.89	121	0.41	322	1.10	42	0.14	791	2.71	276	0.94	21	0.07	355	1.22	686	2.35	29213	99.99
4	सैदपुर	345	1.34	164	0.64	598	2.33	78	0.03	924	3.60	300	1.17	16	0.06	398	1.55	945	3.68	25676	100.00
5	देवकली	398	1.47	77	0.28	632	2.34	54	0.20	646	2.39	369	1.37	12	0.04	527	1.95	1062	3.93	27020	99.99
6	विरनो	170	0.79	101	0.47	90	0.42	7	0.03	522	2.41	709	1.32	15	0.07	852	3.94	405	1.87	21620	99.99
7	मरदह	257	1.00	106	0.41	124	0.48	6	0.02	599	2.34	513	2.01	28	0.11	616	2.41	445	1.74	25575	99.97
8	गाजीपुर	64	0.31	50	0.24	111	0.54	13	0.06	280	1.35	978	4.72	38	0.18	517	7.32	943	4.55	20716	99.99
9	करण्डा	279	1.62	323	1.88	689	4.01	22	0.13	262	1.52	402	2.34	27	0.16	569	3.31	654	3.80	17200	99.97
10	कासिमाबाद	201	0.59	166	0.49	214	0.63	4	0.01	556	1.64	753	2.23	31	0.09	958	2.83	581	1.72	33817	99.98
11	वाराचवर	135	0.51	394	1.48	313	1.18	0	0.00	361	1.36	574	2.16	7	0.03	712	2.68	648	2.44	26532	99.99
12	मोहम्मदाबाद	82	0.36	166	0.73	217	0.96	27	0.12	292	1.29	1311	5.78	7	0.03	1792	7.90	706	3.55	22695	100.00
13	भावरकोल	849	3.48	690	2.83	565	2.32	5	0.02	231	0.95	521	2.14	362	1.48	1451	5.95	756	3.10	24394	100.00
14	जमानिया	222	0.61	188	0.52	557	1.53	43	0.12	33	0.09	388	1.07	18	0.05	654	1.80	1165	3.21	36326	100.00
15	रेवतीपुर	313	1.55	464	2.29	409	2.02	43	0.21	105	0.52	172	0.85	43	0.21	443	2.19	833	4.12	20237	100.00
16	भदौरा	99	0.45	110	0.50	665	3.05	38	0.17	56	0.26	67	0.31	29	0.13	163	0.75	377	1.73	21816	99.99
	योग	4214	1.03	3539	0.87	5928	1.45	415	0.10	7165	1.75	8916	1.93	753	0.18	11834	2.90	11514	35.49	408655	100.00

शस्य गहनता

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में शस्य गहनता के वितरण प्रतिरूप को समझाने का प्रयास किया गया है। यहां क्षेत्र में इसके वितरण का सबसे अधिक भाग जमानिया (182.7) विकास खण्ड में देखने को मिलता है, जबकि इसके वितरण का सबसे कम भाग रेवतीपुर (131.2) विकास खण्ड में देखने को मिलता है। क्षेत्र में इसके वितरण प्रतिरूप के स्पष्टीकरण हेतु तालिका संख्या–2 एवं मानचित्र संख्या–1 A का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या – 2

जनपद में शस्य गहनता का वितरण प्रतिरूप % में वर्ष–2014

क्रमांक	%	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 175.00	उच्च	4	25.00
2.	150.00 – 175.00	मध्यम	9	56.25
3.	< – 150.00	निम्न	3	18.75
योग	03		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपरोक्त तालिका संख्या–2 एवं मानचित्र संख्या–1 A के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में शस्य गहनता के वितरण के उच्च श्रेणी के अन्तर्गत कुल चार विकास खण्ड हैं जो क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सादात, उत्तरी भाग में कासिमाबाद, दक्षिणी भाग में जमानियां एवं मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर स्थित हैं। इसी तरह मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सैदपुर, दक्षिणी–पश्चिमी भाग में देवकली, दक्षिणी भाग में करण्डा तथा मध्यवर्ती भाग में मनिहारी एवं मुहम्मदाबाद को लेकर कुल नौ विकास खण्ड हैं। जबकि निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल तीन विकास खण्ड हैं। मध्यवर्ती भाग में रेवतीपुर, दक्षिणी–पूर्वी भाग में भदौरा तथा पूर्वी भाग में भावरकोल विकास खण्ड हैं।

उक्त तालिका एवं मानचित्र के वितरण प्रतिरूप के अध्ययन करने से यह ज्ञात हुआ है कि क्षेत्र में सर्वाधिक वितरण पश्चिमी, मध्यवर्ती एवं दक्षिणी भाग में पाया जाता है जबकि इसके वितरण का न्यूनाधिक भाग पूर्वी, मध्यवर्ती–पूर्वी एवं दक्षिणी–पूर्वी भाग में पाया जाता है।

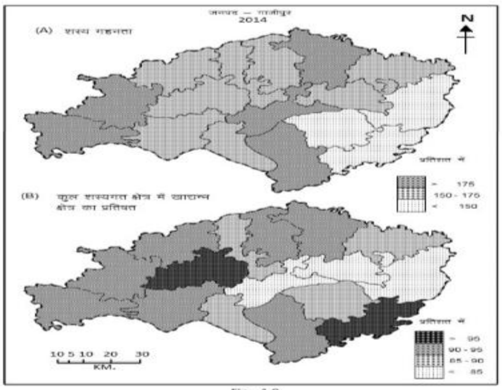

Fig. 1.0

खाद्यान्न क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में खाद्यान क्षेत्र के वितरण प्रतिरूप को जानने का प्रयास किया गया है, क्षेत्र में वितरण का सर्वाधिक भाग भदौरा (96.7) विकास खण्ड में पाया जाता है, जबकि इसके वितरण का कम भाग मुहम्मदाबाद (83.3) विकास खण्ड में पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में खाद्यान क्षेत्र के वितरण को और अधिक स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–3 एवं मानचित्र संख्या–1 B का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या – 3

जनपद में खाद्यान क्षेत्र का वितरण प्रतिरूप % में वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शास्यगत भूमिका %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 95.00	उच्च	2	12.50
2.	90.00 – 95.00	मध्यम उच्च	7	43.75
3.	85.00 – 90.00	मध्यम	4	25.00
4.	< – 85.00	निम्न	3	18.75
योग	04		16	100.00

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-6* July- 2020
Innovation The Research Concept

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका संख्या–3 एवं मानचित्र संख्या–1 B के अध्ययन करने से खाद्यान क्षेत्र के वितरण प्रतिरूप का क्रमबद्ध प्रतिरूप ज्ञात हुआ है। यहां क्षेत्र में उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल दो विकास खण्ड मध्यवर्ती भाग में मनिहारी एवं दक्षिणी–पूर्वी भाग में भदौरा हैं, जबकि मध्यम उच्च श्रेणी के अन्तर्गत कुल सात विकास खण्ड हैं जो पश्चिमी भाग में सैदपुर, सादात, उत्तरी–पश्चिमी भाग में जखनियां, उत्तरी भाग में मरदह, कासिमाबाद, दक्षिणी–पश्चिमी भाग मे देवकली एवं दक्षिणी भाग में जमानियाँ विकास खण्ड समाहित हैं। इसी तरह मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल चार विकास खण्ड हैं उत्तरी भाग में विरनों, उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर, दक्षिणी भाग में करण्डा तथा मध्यवर्ती भाग में रेवतीपुर सम्मिलित हैं। जबकि निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल तीन विकास खण्ड हैं। मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर, मुहम्मदाबाद एवं भावरकोल विकास खण्ड निहित है।

उक्त तालिका एवं मानचित्र के अध्यनोपरान्त यह ज्ञात हुआ है कि क्षेत्र में सबसे अधिक खाद्यान क्षेत्र का वितरण मध्यवर्ती, दक्षिणी–पूर्वी भाग में देखने को मिलता है जबकि इसके वितरण का सबसे कम भाग मध्यवर्ती एवं पूर्वी भाग में देखने को मिलता है।

फसल प्रतिरूप

धान

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत धान के वितरण को दिखाने का प्रयास किया गया है। क्षेत्र में धान के वितरण के अध्ययन के उपरान्त यह स्पष्ट किया गया है कि क्षेत्र में सबसे अधिक धान का वितरण सादात (43.14) एवं जखनिया (43.12) विकास खण्ड में पाया जाता है। जबकि इसका सबसे कम वितरण क्षेत्र के भावरकोल (16.98) विकास खण्ड में पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में धान के वितरण को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास तालिका संख्या–4 एवं मानचित्र संख्या–2 A में किया गया है।

तालिका संख्या – 4

गाजीपुर जनपद में धान का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 40.00	अति उच्च	6	37.50
2.	35.00 – 40.00	उच्च	3	18.75
3.	30.00 – 35.00	मध्यम	3	18.75
4.	25.00 – 30.00	निम्न	2	12.50
5.	< – 25.00	अति निम्न	2	12.50
योग	03		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका संख्या–4 एवं मानचित्र संख्या–2 A अध्ययन से यह स्पष्ट किया गया है कि क्षेत्र में धान के वितरण की विभिन्न श्रेणियां पायी जाती है, जिसमें अतिउच्च श्रेणी के अन्तर्गत कुल 6 विकास खण्ड सम्मिलित हैं, जिनमें पश्चिमी भाग में सादात, जखनियाँ, उत्तरी भाग में विरनो, मरदह, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी एंव दक्षिणी–पूर्वी भाग में भदौरा विकास खण्ड आते हैं, जबकि उच्च श्रेणी एवं मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल तीन–तीन विकास खण्ड जो क्रमशः उत्तरी भाग में कासिमाबाद उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर दक्षिणी भाग में जमानिया तथा पश्चिमी भाग में सैदपुर, दक्षिणी–पश्चिमी भाग में देवकली व मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर विकास खण्ड सम्मिलित हैं। इसी तरह निम्न श्रेणी एवं अतिनिम्न श्रेणी के अन्तर्गत भी केवल 2–2 विकास खण्ड सम्मिलित है। जो क्रमशः मध्यवर्ती भाग में मुहम्मदाबाद रेवतीपुर तथा दक्षिणी भाग में करण्डा व पूर्वी भाग में भावरकोल विकास खण्ड समाहित है।

उक्त तालिका एवं मानचित्र के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत क्षेत्र में धान के वितरण का सर्वाधिक भाग पश्चिमी, उत्तरी, मध्यवर्ती उत्तरी एवं दक्षिणी–पूर्वी भागों में देखने को मिलता है जबकि इसके वितरण का न्यूनाधिक भाग दक्षिणी एवं मध्यवर्ती पूर्वी भाग में देखने को मिलता है।

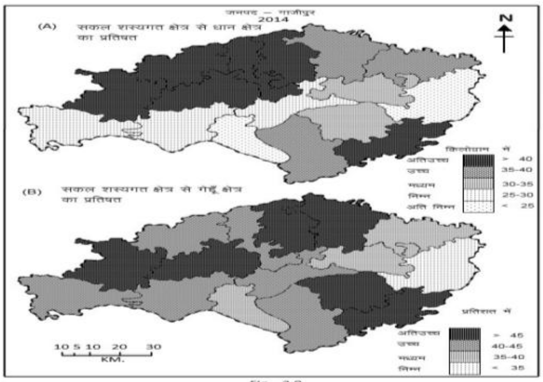

Fig. 2.0

गेहूँ :–

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत गेंहूँ के वितरण का अध्ययन किया गया है, इसके अध्ययनोपरान्त यह ज्ञात किया गया है कि क्षेत्र में इसके वितरण का सर्वाधिक भाग मनिहारी (48.25) एवं मरदह (46.94) विकास खण्ड में पाया जाता है जबकि इसके वितरण का न्यूनाधिक भाग भांवरकोल विकास खण्ड में पाया जाता है। इसके वितरण को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास तालिका संख्या–5 एवं मानचित्र संख्या–2 B में किया गया है।

तालिका संख्या – 5

गाजीपुर जनपद में गेहू का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 45.00	उच्च	6	37.50
2.	40.00 – 45.00	मध्यम उच्च	6	37.50
3.	30.00 – 40.00	मध्यम	3	18.75
4.	< – 35.00	निम्न	1	6.25

योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका संख्या–5 एवं मानचित्र संख्या–2 B के अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में गेहूँ के वितरण में लगभग समानता पायी जाती है, उच्च श्रेणी के अन्तर्गत कुल 6 विकास खण्ड सम्मिलित हैं। जिनमें पश्चिमी भाग में सादात, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, रेवतीपुर, उत्तरी भाग में मरदह, कासिमाबाद एवं दक्षिणी–पर्वूी भाग में भदौरा विकास खण्ड आते हैं, जबकि मध्यम उच्च श्रेणी के अन्तर्गत भी कुल 6 विकास खण्ड पश्चिमी भाग मे सैदपुर, दक्षिणी–पश्चिमी भाग में देवकली, उत्तरी–पश्चिमी भाग में जखनियाँ, उत्तरी भाग में विरनो, दक्षिणी भाग में जमानिया एवं मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर विकास खण्ड समाहित हैं। इसी प्रकार मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल तीन विकास खण्ड आते हैं, जो क्षेत्र के दक्षिणी भाग में करण्डा, मध्यवर्ती भाग में मुहम्मदाबाद एवं उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर हैं। अतिनिम्न श्रेणी के अन्तर्गत केवल एक विकास खण्ड पूर्वी भाग में भांवरकोल है।

उक्त तालिका एवं मानचित्र के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत गेहूँ के वितरण का सबसे अधिक भाग मध्यवर्ती एवं उत्तरी भाग में देखने को मिलता है। जबकि इसके वितरण का सबसे कम भाग क्षेत्र के पूर्वी भाग में देखने को मिलता है।

जौ

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर में फसल प्रतिरूप के रूप में जौ के वितरण का स्पष्टीकरण किया गया है। जिसमें यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि क्षेत्र में जौ का सर्वाधिक वितरण रेवतीपुर (4.25) विकास खण्ड में पाया जाता है, जबकि इसका न्यूनाधिक क्षेत्र के मनिहारी (0.16) विकास खण्ड में पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में इसके वितरण को और अधिक स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–6 का उपयोग किया गया है।

तालिका संख्या – 6

गाजीपुर जनपद में जौ का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 4.00	उच्च	1	6.25
2.	2.00 – 4.00	मध्यम	3	18.75
3.	< – 2.00	निम्न	12	75.00
योग	03		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका संख्या–6 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में जौ के वितरण प्रतिरूप अपने आप में लगभग समानता लिए हुए हैं। यहाँ उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल एक विकास खण्ड रेवतीपुर जो क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में स्थित हैं। जबकि मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल तीन विकास खण्ड सम्मिलित हैं, जिसमें क्षेत्र के दक्षिणी भाग में करण्डा, जमानियां एवं पूर्वी भाग में भावरकोल विकास खण्ड आते हैं। इसी तरह निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल 12 विकास खण्ड स्थित हैं। जो क्षेत्र के आधे से अधिक भाग को लिये हुए है। जिसमें क्षेत्र के पश्चिमी भाग मे सैदपुर, सादात, उत्तरी–पश्चिमी भाग में जखनिया, उत्तरी भाग में विरनो, मरदह, कासिमाबाद, दक्षिणी–पश्चिमी भाग में देवकली, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर एवं दक्षिणी–पूर्वी भाग में भदौरा विकास खण्ड समाहित हैं।

उक्त तालिका एवं मानचित्र के अवलोकन से यह स्पष्ट हुआ है कि अध्ययन क्षेत्र में जौ के वितरण का सबसे अधिक भाग क्षेत्र के मध्यवर्ती–पूर्वी भाग में देखने को मिलता है जबकि इसके वितरण का सबसे कम भाग उत्तरी–पश्चिमी, मध्यवर्ती–पश्चिमी भाग में देखने को मिलता है।

ज्वार

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत ज्वार के वितरण को दिखाया गया है। इसके वितरण का सर्वाधिक भाग क्षेत्र के करण्डा (2.16) एवं भावरकोल (2.16) विकास खण्ड में पाया जाता है, जबकि इसके वितरण का न्यूनाधिक भाग क्षेत्र के मनिहारी (0.02) विकास खण्ड में पाया जाता है। इसके वितरण को स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–7 का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या – 7

गाजीपुर जनपद में ज्वार का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 2.00	उच्च	2	12.50
2.	1.00 – 2.00	मध्यम	4	25.00
3.	< – 1.00	निम्न	10	62.50
योग	03		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका संख्या–7 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में ज्वार के वितरण में विभिन्नता देखने को मिलती है, यहाँ उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल दो विकास खण्ड दक्षिणी भाग में करण्डा एवं पूर्वी भाग में भांवरकोल, मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल चार विकास खण्ड सम्मिलित हैं जो क्षेत्र के दक्षिणी–पश्चिमी भाग में देवकली, दक्षिणी भाग में जमानियां, मध्यवर्ती–पूर्वी भाग में रेवतीपुर एवं पूर्वी भाग में भदौरा हैं। जबकि निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल 10 विकास खण्ड आते हैं। जो क्षेत्र के आधे से अधिक भाग को लिए हुए हैं। जिसमें क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सादात, सैदपुर, उत्तरी–पश्चिमी भाग में जखनियां, मध्यवर्ती भगा में मनिहारी, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद उत्तरी भाग में विरनो, मरदह, कासिमाबाद एवं उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर हैं।

उक्त तालिका एवं मानचित्र के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में ज्वार के वितरण का सर्वाधिक भाग दक्षिणी एवं पूर्वी भाग में देखने को मिलता है, जबकि इसके वितरण का न्यूनाधिक भाग मध्यवर्ती, पश्चिमी एवं उत्तरी भाग में देखने को मिलता है।

बाजरा :

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में फसल प्रतिरूप के रूप में बाजरा के वितरण को दिखाने का प्रयास किया गया है। इसके वितरण से यह ज्ञात हुआ है कि क्षेत्र में सबसे अधिक भाग करण्डा (14.05) विकास खण्ड में पाया जाता है। जबकि इसके वितरण का सबसे कम भाग मरदह (0.16) विकास खण्ड में पाया जाता है। क्षेत्र में इसके वितरण को और अधिक स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–8 का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या – 8

गाजीपुर जनपद में बाजरा का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 12.00	अति उच्च	1	6.25
2.	9.00 – 12.00	उच्च	1	6.25
3.	6.00 – 9.00	मध्यम	3	18.75
4.	3.00 – 6.00	निम्न	2	12.50
5.	< – 3.00	अति निम्न	9	56.25
योग	05		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका संख्या–8 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में बाजरा के वितरण में असमानता देखने को मिलती है। यहाँ अति उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल एक विकास खण्ड दक्षिणी भाग में करण्डा है और उच्च श्रेणी के अन्तर्गत भी केवल एक विकास खण्ड दक्षिणी–पश्चिमी भाग में देवकली है। इसी तरह मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल तीन विकास खण्ड पश्चिमी भाग में सैदपुर, मध्यवर्ती भाग में मुहम्मदाबाद एवं पूर्वी भाग में भांवरकोल विकास खण्ड आते हैं और निम्न श्रेणी के अन्तर्गत केवल दो विकास खण्ड मध्यवर्ती भाग में रेवतीपुर एवं दक्षिणी भाग में जमानियां सम्मिलित हैं। अतिनिम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल नौ विकास खण्ड स्थित हैं, जो क्षेत्र के आधे से अधिक भाग को लिए हुए हैं। इसमें क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सादात, उत्तरी भाग में जखनिया, विरनो, मरदह, कासिमाबाद उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, गाजीपुर एवं दक्षिणी–पूर्वी भाग में भदौरा विकास खण्ड समाहित हैं।

उक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट हुआ है कि क्षेत्र में बाजरा के वितरण का सबसे अधिक भाग दक्षिणी भाग में एवं इसके वितरण का सबसे कम भाग क्षेत्र के लगभग शेष सभी भागों में देखने को मिलता है।

मक्का

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत मक्का के वितरण को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसके वितरण का क्षेत्र में सबसे अधिक भाग सैदपुर (0.68) विकास खण्ड में पाया जाता है जबकि इसके वितरण का सबसे कम भाग मरदह (0.02) जखनियां (0.03) विरनो (0.03), कासिमाबाद (0.03) एवं रेवतीपुर (0. 03) विकास खण्ड में देखने को मिलता है। इसके स्पष्टीकरण हेतु तालिका संख्या–9 का अध्ययन किया जा सकता है।

तालिका संख्या –9

गाजीपुर जनपद में मक्का का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 0.60	अति उच्च	1	6.25
2.	0.45 – 0.60	उच्च	1	6.25
3.	0.30 – 0.45	मध्यम	1	6.25
4.	0.15 – 0.30	निम्न	1	6.25
5.	< – 0.15	अति निम्न	10	62.50
योग	05		14	87.50

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका संख्या–9 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में मक्का के वितरण में लगभग समानता पायी जाती है। यहाँ अति उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल एक विकास खण्ड सैदपुर जो क्षेत्र के पश्चिमी भाग में स्थित है। इसी तरह उच्च श्रेणी के अन्तर्गत भी केवल एक विकास खण्ड भांवरकोल जो क्षेत्र के पूर्वी भाग में स्थित है। और मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत भी केवल एक विकास खण्ड बाराचवर जो क्षेत्र के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है, इसी तरह निम्न श्रेणी के अन्तर्गत भी केवल एक विकास खण्ड सादात जो क्षेत्र के पश्चिमी भाग में स्थित है जबकि अति निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल दस विकास खण्ड सम्मिलित हैं, जो क्षेत्र के लगभग आधे से अधिक भाग को लिए हुए है। इसमें क्षेत्र के उत्तरी–पश्चिमी भाग में जखनिया, उत्तरी भाग में विरनो, मरदह, कासिमाबाद मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, रेवतीपुर दक्षिणी–पश्चिमी भाग में देवकली एंव दक्षिणी भाग में करण्डा विकास खण्ड समाहित हैं। किन्तु क्षेत्र में फसल प्रतिरूप में मक्का का वितरण क्षेत्र के दक्षिणी भाग में जमानिया एवं दक्षिणी–पूर्वी भाग में भदौरा ये दो ऐसे विकास खण्ड हैं जहाँ पर मक्का का वितरण नगण्य है।

उक्त तालिका एवं मानचित्र के अवलोकन से यह स्पष्ट हुआ है कि क्षेत्र में मक्के के वितरण का सर्वाधिक भाग दक्षिणी–पश्चिमी, पूर्वी, उत्तरी–पूर्वी एवं पश्चिमी भाग में देखने को मिलता है। जबकि लगभग शेष सभी भागों में इसका वितरण न्यूनाधिक मात्रा में देखने को मिलता है। लेकिन क्षेत्र के दक्षिणी–पूर्वी भाग ऐसे हैं जहाँ मक्के का वितरण शून्य मात्रा में है।

मडुआ :–

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में मडुआ एक मोटा अनाज है, यह कुल फसलगत क्षेत्र के 0.1% भू–भाग पर पाया जाता है, इसकी कृषि जनपद के दक्षिणी–पश्चिमी और उत्तरी–पूर्वी भागों में की जाती है। औसत रूप में 0.15% शस्यगत भूमि में मडुआ की कृषि केवल पाँच विकास खण्डो में की जाती है। तालिका सख्या– 10 से स्पष्ट है कि सैदपुर विकास खण्ड में सर्वाधिक मडुआ की कृषि होती है, जबकि भावरकोल और

बाराचवर में भी मडुआ बोया जाता है, मध्यम और निम्न स्तर के अन्तर्गत सादात और देवकली विकास खण्ड आते हैं, जबकि जनपद का उत्तरी–पश्चिमी भाग करण्डा और जमानिया से लकर उत्तर में मरदह तक इसकी कृषि नगण्य है।

तालिका संख्या – 10
अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में मडुआ का वितरण वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 0.60	अति उच्च	1	6.25
2.	0.45 – 0.60	उच्च	1	6.25
3.	0.30 – 0.45	मध्यम	1	6.25
4.	0.15 – 0.30	निम्न	2	12.50
5.	< – 0.15	अति निम्न	10	62.50
योग			15	93.75

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर 2014

उड़द का वितरण :–

अध्ययन क्षेत्र में उड़द खरीफ की फसल है। यह कुल शस्य गत भूमि के 0.31% भाग पर बोयी जाती है। और थोड़ी–2 मात्रा में लगभग हर विकास खण्ड में पैदा होती है। लेकिन सापेक्षिक रूप से गाजीपुर नगर के समीपवर्ती भागों में इसकी कृषि अधिक होती है। तालिका संख्या–11 से स्पष्ट होता है कि उड़द की सर्वाधिक कृषि मुहम्मदाबाद, रेवतीपुर में होती है, जबकि दक्षिण पश्चिमी में सैदपुर और मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, गाजीपुर और उत्तरी–पूर्वी भाग में कासिमाबाद, बाराचवर में उड़द बोयी जाती है। दक्षिणी और उत्तरी–पश्चिमी भागों में इसकी कृषि कम होती है।

तालिका संख्या – 11
अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में उड़द का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 0.75	उच्च	2	12.50
2.	0.50 – 0. 75	मध्यम उच्च	1	6.25
3.	0.25 – 0. 50	मध्यम	5	31.25
4.	< – 0.25	निम्न	8	50.00
योग	04		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका, गाजीपुर 2014

मूँग का वितरण

गाजीपुर में दलहन फसलों के अन्तर्गत मूँग की कृषि बहुत कम केवल 258 हेक्टेयर पर की जाती है, जो कुल शस्यगत भूमि का 0.6% है। तालिका संख्या–12 से स्पष्ट है कि सापेक्षिक रूप में मूँग की कृषि पश्चिमी भाग के सादात, जखनिया, और मनिहारी विकास खण्डों में की जाती है, जबकि पूर्वी भाग में मुहम्मदाबाद में की जाती है। दक्षिणी और उत्तरी भागों में मूँग की कृषि अत्यल्प है। मुख्य रूप से यह जायद और खरीफ की फसल है। इसलिए जिन क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा है, वहाँ इसकी अधिक खेती होती है।

तालिका संख्या – 12
गाजीपुर जनपद में मूंग का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 0.20	उच्च	1	6.25
2.	0.10 – 0.20	मध्यम	3	18.75
3.	< – 0.10	निम्न	10	62.50
योग			14	87.50

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर 2014

मसूर का क्षेत्रीय वितरण :–

गाजीपुर में दलहन फसलों में मसूर सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसके अन्तर्गत कुल शस्यगत भूमि का 2. 62% भाग सम्मिलित है। तालिका संख्या–13 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में मसूर की सर्वाधिक कृषि की जाती है। भावरकोल विकास खण्ड में कुल शस्य गत भूमि का 21% से अधिक भाग मसूर के अन्तर्गत है। दूसरा स्थान बाराचवर, तीसरा स्थान मुहम्मदाबाद और रेवतीपुर का है। दक्षिणी और उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्रों में मसूर की कृषि कम होती है। पूर्वी भाग में मसूर की कृषि का केन्द्रीकरण काली मिट्टी की प्रधानता के कारण हुआ है। क्योंकि मसूर एक सिंचाई विहीन फसल है और करैल मिट्टी में यह आसानी से हो जाती है।

तालिका संख्या – 13
गाजीपुर जनपद में मसूर का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 6.00	अति उच्च	1	6.25
2.	4.50 – 6.00	उच्च	1	6.25
3.	3.00 – 4.50	मध्यम	2	12.50
4.	1.50 – 3.00	निम्न	3	18.75
5.	< – 1.50	अति निम्न	9	56.25
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका, गाजीपुर 2014

चना का वितरण

क्षेत्र के दलहन फसलों में चना तीसरी महत्वपूर्ण फसल है। इसके अन्तर्गत कुल शस्यगत क्षेत्र का 1.03% भाग सम्मिलित है। तालिका संख्या–14 से स्पष्ट है कि चना की अधिकांश कृषि जनपद के दक्षिणी और पूर्वी भागों में की जाती है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में पानी सूखने के बाद चना की फसल बिना सिंचाई के पैदा होती है। सर्वाधिक चना की कृषि भावरकोल में और रेवतीपुर में होती है। दक्षिणी भाग में करण्डा, देवकली, सैदपुर और पश्चिमी भाग में जखनियाँ में चना की कृषि की जाती है। जनपद

के मध्यवर्ती और उत्तरी भागों में चना का कृषि क्षेत्र कम है।

तालिका संख्या – 14
गाजीपुर जनपद में चना का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 2.00	अति उच्च	1	6.25
2.	1.50 – 2.00	उच्च	3	18.75
3.	1.00 – 1.50	मध्यम	2	12.50
4.	0.50 – 1.00	निम्न	6	37.50
5.	< – 0.50	अति निम्न	4	25.00
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका, गाजीपुर 2014

मटर का वितरण

दलहन फसलों में मटर भी महत्वपूर्ण फसल है। इसके अन्तर्गत कुल शस्यगत भूमि का 0.87% भाग मिलता है, तालिका संख्या–15 के अध्ययन से स्पष्ट है कि दलहन का कृषि क्षेत्र भी गाजीपुर के दक्षिणी और पूर्वी भागों में अधिक है। इसकी सर्वाधिक कृषि रेवतीपुर और भावरकोल में की जाती है, इसके बाद करण्डा और जखनियां उल्लेखनीय मटर के कृषि क्षेत्र हैं। मध्यवर्ती और उत्तरी भागों में मटर के अन्तर्गत भूमि कम है। करैल मिट्टी और बाढ़ग्रस्त कछारी मिट्टी में मटर की कृषि अधिक होने का कारण वहाँ सिचाई की सुविधा न होने के कारण नमी की अधिकता के कारण मटर की कृषि अधिक होती है।

तालिका संख्या – 15
गाजीपुर जनपद में मटर का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 2.00	अति उच्च	2	12.50
2.	1.50 – 2.00	उच्च	1	6.25
3.	1.00 – 1.50	मध्यम	2	12.50
4.	0.50 – 1.00	निम्न	3	18.75
5.	< – 0.50	अति निम्न	8	50.00
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर 2014

अरहर का क्षेत्रीय वितरण

अध्ययन क्षेत्र में मसूर के बाद दूसरी महत्वपूर्ण फसल अरहर है, जो कुल शस्यगत भूमि के 1.03% भाग पर बोयी जाती है, तालिका संख्या–16 को देखने से यह स्पष्ट है कि इसकी सर्वाधिक कृषि करण्डा विकास खण्ड में की जाती है। दूसरा स्थान भदौरा का है, इसके अतिरिक्त भावरकोल, रेवतीपुर, सैदपुर और देवकली में भी अरहर पैदा होती है। क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप के अनुसार सापेक्षिक रूप से अरहर की अधिक कृषि गाजीपुर के दक्षिणी–पूर्वी और उत्तरी–पश्चिमी भागों में की जाती है। मुख्य रूप से भदौरा, रेवतीपुर, भावरकोल, करण्डा, देवकली, सैदपुर तथा उत्तर–पश्चिमी में विरनो, जखनिया और सादात में अरहर की कृषि की जाती है।

तालिका संख्या – 16
अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में अरहर का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 4.00	अति उच्च	1	6.25
2.	3.00 – 4.00	उच्च	1	6.25
3.	2.00 – 3.00	मध्यम	4	25.00
4.	1.00 – 2.00	निम्न	4	25.00
5.	< – 1.00	अति निम्न	6	37.50
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर, 2014

लाही का क्षेत्रीय वितरण

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में लाही अथवा सरसों स्वतन्त्र फसल नहीं है, बल्कि यह मिश्रित रूप से कुछ फसलों के साथ बोयी जाती है। लाही का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप तालिका संख्या–17 से स्पष्ट है कि लाही की भी अधिक कृषि दक्षिणी भाग में की जाती है। यहाँ सादात, सैदपुर से लेकर रेवतीपुर तक गंगा नदी के किनारे वाले भागों में सरसों की अधिक कृषि की जाती है। तालिका के अनुसार .2% से अधिक लाही का कृषि क्षेत्र रेवतीपुर और सैदपुर में .15 से .2 के बीच भदौरा और देवकली में .1से.15 के अन्तर्गत मुहम्मदाबाद, जमानिया, करण्डा और सादात में है। क्षेत्र के मध्यवर्ती और उत्तरी भागों में लाही का कृषि क्षेत्र बहुत ही कम है।

तालिका संख्या – 17
गाजीपुर जनपद में लाही का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 0.20	अति उच्च	1	6.25
2.	0.15 – 0.20	उच्च	1	6.25
3.	0.10 – 0.15	मध्यम	2	12.50
4.	0.05 – 0.10	निम्न	3	18.75
5.	< – 0.05	अति निम्न	9	56.25
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर 2014

गन्ना का क्षेत्रीय वितरण

जनपद गाजीपुर में गन्ना एक महत्वपूर्ण वार्षिक फसल है। इसके अन्तर्गत कुल शस्यगत भूमि का 1.75% भाग मिलता है। अध्ययन से स्पष्ट है कि गन्ने का कृषि क्षेत्र गाजीपुर के उत्तरी–पश्चिमी और दक्षिणी–पश्चिमी भागों में अधिक है। जबकि मध्यवर्ती और पूर्वी भागों में अपेक्षाकृत कम है। इसकी सर्वाधिक कृषि सैदपुर और सादात में की जाती है। अन्य विकास खण्डों में जखनिया, मनिहारी, देवकली, विरनो है। कासिमाबाद और करण्डा में

भी इसका वितरण अधिक है। जबकि गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, बाराचवर में कम गन्ने की कृषि की जाती है। दक्षिणी–पूर्वी भाग में जमानिया, रेवतीपुर, भदौरा और भावरकोल में कृषि नगण्य है। जिसको तालिका संख्या–18 से स्पष्ट किया जा सकता है।

तालिका संख्या – 18

गाजीपुर जनपद में गन्ना का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 2.00	अति उच्च	7	43.75
2.	1.50 – 2.00	उच्च	2	12.50
3.	1.00 – 1.50	मध्यम	3	18.75
4.	0.50 – 1.00	निम्न	2	12.50
5.	< – 0.50	अति निम्न	2	12.50
योग	05		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर, 2014

आलू का क्षेत्रीय वितरण

अध्ययन क्षेत्र में कुल सब्जियों में आलू सर्वाधिक महत्वपूर्ण फसल है। कुल शस्यगत क्षेत्र के 1.93% भू–भाग आलू बोया जाता है। तालिका–19 से स्पष्ट है कि आलू की अधिक कृषि मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर और मुहम्मदाबाद में की जाती है। इससे सटे हुए उत्तरी भागों में मरदह, विरनो, कासिमाबाद, बाराचवर में भी आलू अधिक बोया जाता है। जनपद के दक्षिणी–पश्चिमी भागों में आलू कम बोया जाता है। आलू की कृषि के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण विकास खण्ड मुहम्मदाबाद और गाजीपुर है, जबकि करण्डा, कासिमाबाद, बाराचवर भी आलू की कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। इन क्षेत्रों में आलू की अधिक कृषि के लिए गाजीपुर नगर और सड़क मार्ग का विकास है।

तालिका संख्या – 19

गाजीपुर जनपद में आलू का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 4.00	अति उच्च	2	12.50
2.	3.00 – 4.00	उच्च	1	6.25
3.	2.00 – 3.00	मध्यम	5	31.25
4.	1.00 – 2.00	निम्न	4	25.00
5.	< – 1.00	अति निम्न	4	25.00
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर, 2014

प्याज का वितरण :–

अध्ययन क्षेत्र में प्याज एक गौड़ फसल है। इसके अन्तर्गत कुल शस्यगत क्षेत्र का 0.18% भू–भाग सम्मिलित है। तालिका–20 के अध्ययन से स्पष्ट है कि प्याज की अधिक कृषि दक्षिणी–पूर्वी भागों में भावरकोल, रेवतीपुर, भदौरा, गाजीपुर और करण्डा में की जाती है। उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्रों में जखनिया, मनिहारी और मरदह में भी प्याज अधिक बोया जाता है। जबकि उत्तरी और दक्षिणी–पश्चिमी भागों में प्याज की कृषि कम की जाती है। इसका सर्वाधिक संकेदण भावरकोल रेवतीपुर और जखनिया में है।

तालिका संख्या – 20

गाजीपुर जनपद में प्याज का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 0.30	उच्च	1	6.25
2.	0.20 – 0.30	मध्यम उच्च	2	12.50
3.	0.10 – 0.20	मध्यम	5	31.25
4.	< – 0.10	निम्न	8	50.00
योग	04		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर, 2014

कुल सब्जियों का वितरण

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद सब्जियों की कृषि के लिए अधिक मसहूर है। मुख्य रूप से यहाँ रवी, खरीफ, जायद तीनों फसलों में सब्जी महत्वपूर्ण फसल है। इसके अन्तर्गत 2.9% क्षेत्र है। इसकी सर्वाधिक कृषि मुहम्मदाबाद, भावरकोल विकास खण्ड में की जाती है। गाजीपुर विकास खण्ड सब्जियों की कृषि के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। तालिका– 21 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सब्जियों का केन्द्रीकरण गाजीपुर विकास खण्ड से लेकर भावरकोल तक है। इसके दक्षिण में करण्डा ओर रेवतीपुर उत्तर में मरदह, विरनो, कासिमाबाद और बाराचवर में भी सब्जियों की कृषि की जाती है। जंगीपुर सब्जी मण्डी के कारण सब्जियों के कृषि क्षेत्र का अधिक विकास हुआ है।

तालिका संख्या – 21

गाजीपुर जनपद में कुल सब्जियों का वितरण प्रतिरूप वर्ष–2014

क्रमांक	कुल शस्यगत क्षेत्र का %	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	> – 6.00	उच्च	2	12.50
2.	4.00 – 6.00	मध्यम उच्च	1	6.25
3.	2.00 – 4.00	मध्यम	7	43.75
4.	< – 2.00	निम्न	6	37.50
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकीय पत्रिका गाजीपुर, 2014

अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपुर के कृषि विकास का अध्ययन भूमि उपयोग प्रतिरूप, शुद्ध कृषि क्षेत्र का वितरण, सिंचित क्षेत्र के वितरण, शस्यगहनता, खाद्यान्न क्षेत्रों का वितरण, उर्वरक की क्षेत्रीय खपत, विभिन्न फसलों के क्षेत्रीय प्रतिरूप के सन्दर्भ में किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जनपद में भौतिक तथ्य कृषि विकास में बहुत महत्वपूर्ण है।[2] विशेष रूप से मिट्टियों की अनुकूलता, जल क्षेत्रों की अधिकता, करैल मिट्टी की बहुलता ने कृषि विकास को अधिक प्रभावित किया है।[3] इसलिए मध्यवर्ती और उत्तरी पूर्वी भागों में विभिन्न फसलों का कृषि उत्पादन अधिक है। जबकि गंगा

खादर, पश्चिमी भाग में सादात, सैदपुर, जखनियाँ आदि में कृषि विकास कम है। यह स्पष्ट है कि कृषित भूमि उत्तरी पूर्वी भागों में अधिक है। शस्यगत भूमि की अधिकता, उत्तरी पूर्वी एवं दक्षिणी पूर्वी भागों में अधिक है। श्स्यगहनता की उत्तरी मध्यवर्ती भाग में अधिक है।[4] खाद्यान्न उत्पादन भी मध्यवर्ती और दक्षिणी पूर्वी भागों में अधिक है, उत्तरी–मध्यवर्ती भागों में धान एवं गेहूं की अधिकता, दक्षिणी पूर्वी भागों में दलहन और दक्षिणी भागों में तिलहन की अधिकता है। औसत रूप में उत्तरी पूर्वी एवं मध्यवर्ती भागों में कृषि विकास अधिक हुआ है। **बी0आर0 सिंह (1981)**[5] ने गोरखपुर तहसील में कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास, **वाई0के0 मिश्रा (1986)**[6] ने हाटा तहसील में कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास, **सुखदेव त्रिपाठी (1987)**[7] ने खलीलाबाद तहसील में कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास, **राजेश कुमार आर्य (1999)**[8] ने मालवा पठार में कृषि आधारित उद्योग एवं ग्रामीण विकास, आर्थिक व्यवस्था एवं कालिक घटनाओं से सबसे अधिक प्रभावित है, बढ़ती हुयी जनसंख्या की ऊदर पूर्ति के लिए कृषि भूमि का उपयोग उस गति से नहीं हो रहा है (पाण्डेय, जे0एन0 2001)[9] **(यादव 2002)**[10]। ग्रामीण विकास का उद्देश्य ग्रामीण निर्धन जन समूह के आर्थिक व सामाजिक जीवन को विकसित करना होता है। इस समूह के अन्तर्गत कृषक और भूमिहीन आते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र के अवलोकनोपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण अर्थतन्त्र के आधार अवस्थापना तत्व हैं इसलिए कृषि विकास के अवस्थापना तत्वों का क्षेत्रीय वितरण और कृषिगत विविधता में क्षेत्रीय सहसम्बन्ध मिलता है। यह मध्यवर्ती और उत्तरी भाग में विभिन्न अवस्थापना तत्वों का सघन वितरण और प्रगतिशील कृषि, सब्जी, व्यापारिक कृषि आदि के विकास से समान रूप में विकसित हुआ है। सामान्य रूप से उत्तरी मध्यवर्ती भाग में सब्जियों की कृषि व्यापारिक फसलों के रूप में बढ़ रही है और वहां एक ही मण्डी जंगीपुर में स्थापित है। इसलिए क्षेत्र में और अधिक मण्डियों और शीतगृहों की स्थापना आवश्यक है। कृषि अर्थतन्त्र को गतिशील करने के लिए बाजार व्यवस्था का सक्षम होना आवश्यक है। इसलिए अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी और दक्षिणी–पूर्वी भाग में दक्षिणी और दक्षिणी–पश्चिमी भाग में कृषिगत बाजारों और कृषि मण्डियों की स्थापना भी आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Ali, Mohd., Munir Abdul & Siddiqui, S.H. (2007): Fifty years of Indian Agriculture, Concept Publishing Co., New Delhi.*
2. *Buncel, P.C. (1977): Agricultural Problems of India, Vikas Pub. House Pvt. Ltd. Kolkata.*
3. *Shrivastava, V.K. Srivastava Lokesh & Archana Namdeo (2014): Agriculture system and Environment changes : A Geographical Studies of Arunachal Pradesh in Environment, Agriculture and Population Growth eds, P.R. Chauhan & Others R.K. Book, New Delhi PP. 350-36*
4. *Rai, R.K. (2014): Population Growth, Agricultural Practices and Environmental Problems in Meghalaya in Environment, Agriculture and Population Growth eds, P.R. Chauhan & Others New Delhi PP. 182-192*
5. *सिंह, बी0आर0 (1981):गोरखपुर तहसील में कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास, शोध प्रबन्ध, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।*
6. *मिश्रा, युगलकिशोर (1986): कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास तहसील हाटा, जनपद–देवरिया का प्रतीक अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर*
7. *त्रिपाठी, सुखदेव (1987) : कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास तहसील खलीलाबाद, बस्ती जनपद का प्रतीक अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर*
8. *आर्य, राजेश कुमार (1999): मालवा पठार में कृषि आधारित उद्योग एवं ग्रामीण विकास, प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।*
9. *Pandey, J.N. (2001): Agricultural Growth, Land use Pattern and Productivity in Saryupar Plain, U.P., Indian Research Journal of Social Sciences Basti, Vol. 6, No. 1-2, pp. 98-102.*
10. *यादव, राजेश कुमार (2002): कृषिगत विविधता एवं ग्रामीण विकास तहसील मनकापुर जनपद गोरखपुर का प्रतीक अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।*